अध्याय 8

एज्रा, एक शास्त्री: उसकी यात्रा (भाग 2)

एज्रा की यरूशलेम लौटने की कहानी, जो अध्याय 7 के अन्त में शुरू हुई, पूरे अध्याय 8 में जारी रहती है। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, इस अध्याय का अधिकांश भाग प्रथम पुरुष के वर्णन का हिस्सा है जिसे कभी-कभी "एज्रा के संस्मरण" के रूप में संदर्भित किया जाता है (7:27-8:34; 9:1-15)।

लेखक ने यह अतिरिक्त जानकारी क्यों प्रदान की? कहानी को पूरा करना महत्वपूर्ण था: एज्रा लौट आया, परन्तु वह कैसे लौटा? राजा ने उसे जाने की अनुमति दी और उसे उसके काम में सहायता करने के लिये साधन प्रदान किए, परन्तु उसने राजा की आज्ञा को कैसे पूरा किया? एज्रा 8 में प्राप्त जानकारी के बिना – "एज्रा के संस्मरण" से प्राप्त जानकारी के आधार पर - हम उन प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम नहीं होंगे। इस प्रकार अध्याय 8 महत्वपूर्ण विवरण देता है जो पाठक को एज्रा की यात्रा को, यरूशलेम में उसके पहुँचने के बारे में समझने और सराहना करने में सहायता करता है।

एज्रा के साथ लौटने वाले (8:1-14)

**[1]उनके पूर्वजों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुष ये हैं, और जो लोग राजा अर्तक्षत्र
के राज्य में बेबीलोन से मेरे संग यरूशलेम को गए उनकी वंशावली यह है: [2]अर्थात्
पीनहास के वंश में से गेर्शोम, ईतामार के वंश में से दानिय्येल, दाऊद के वंश में से
हत्तूस, [3]शकन्याह के वंश के परोश के गोत्र में से जकर्याह, जिसके संग डेढ़ सौ पुरुषों
की वंशावली हुई। [4]पहत्मोआब के वंश में से जरह्याह का पुत्र एल्यहोएनै, जिसके
संग दो सौ पुरुष थे। [5]शकन्याह के वंश में से यहजीएल का पुत्र, जिसके संग तीन
सौ पुरुष थे। [6]आदीन के वंश में से योनातान का पुत्र एबेद, जिसके संग पचास पुरुष
थे। [7]एलाम के वंश में से अतल्याह का पुत्र यशायाह, जिसके संग सत्तर पुरुष थे।
[8]शपत्याह के वंश में से मीकाएल का पुत्र जबद्याह, जिसके संग अस्सी पुरुष थे।
[9]योआब के वंश में से यहीएल का पुत्र ओबद्याह, जिसके संग दो सौ अठारह पुरुष
थे। [10]शलोमीत के वंश में से योसिव्याह का पुत्र, जिसके संग एक सौ साठ पुरुष थे।**

[11]बेबै के वंश में से बेबै का पुत्र जकर्याह, जिसके संग अट्ठाईस पुरुष थे। [12]अजगाद के वंश में से हक्कातान का पुत्र योहानान, जिसके संग एक सौ दस पुरुष थे। [13]अदोनीकाम के वंश में से जो पीछे गए उनके ये नाम हैं: अर्थात् एलीपेलेत, यीएल, और समायाह, और उनके संग साठ पुरुष थे। [14]और बिगवै के वंश में से ऊतै और जब्बूद थे, और उनके संग सत्तर पुरुष थे।

जिस तरह अध्याय 2 ने उन कुलों के मुख्य पुरुषों के नाम बताए, जिन्होंने बेबीलोन से यरूशलेम की ओर जरुब्बाबेल के साथ यात्रा की, एज्रा ने अपने साथ आनेवाले घराने के अगुवों के नाम देकर उनकी यात्रा का विस्तृत विवरण देना शुरू किया।

आयतें 1, 2. पिछला अध्याय एज्रा के इन शब्दों के साथ समाप्त हुआ: "और इस्राएल में से मुख्य पुरुषों को इकट्ठा किया कि वे मेरे संग चलें" (7:28)। यह अध्याय इन "मुख्य पुरुषों" के नाम से शुरू होता है, जो **अपने पूर्वजों के घराने के प्रमुख थे**।[1] डेरेक किडनर ने कहा कि "एज्रा अपने समाज की संरचना को अच्छी तरह से जानता था, ताकि वह परिवारों के *प्रमुखों* से अपने निवेदन को निर्देशित कर सके (7:28; 8:1), यह जानते हुए भी कि अधिकतर मामलों में यदि वे आए तो वे अपने साथ अपने समूह को लेकर आएँगे।"[2]

एज्रा के साथ यरूशलेम की यात्रा करने वालों की सूची **गेर्शोम**, **दानिय्येल** और **हत्तूस** के साथ शुरू होती है। इन तीन लोगों ने याजकों और राजघराने की एक अनूठी श्रेणी का गठन किया। हारून से आने वाली दो पीढ़ियों का यहाँ प्रतिनिधित्व किया गया है। (1) "गेर्शोम" हारून के तीसरे पुत्र एलीआज़ार और उसके पोते **पीनहास** के वंशज थे। एज्रा भी इसी वंश से आया (7:1-5)। (2) "दानिय्येल" हारून के चौथे पुत्र, **ईतामार** के वंश से आया।[3] इसके अतिरिक्त, "हत्तूस" ने **दाऊद** की राजकीय घराने का प्रतिनिधित्व किया। यद्यपि उनका नाम या उनकी गिनती यहाँ नहीं की गई है, परन्तु इन तीन परिवारों के अन्य सदस्य इस यात्रा में स्पष्ट रूप से उपस्थित थे। 8:24 में, दो अन्य याजकों के नाम और दस लोगों का उल्लेख किया गया है।[4]

आयतें 3-14. बाकी सूची में दिए गए पुरुषों के नाम बारह अलग-अलग पुरुषों के वंशज थे और इसलिये बारह अलग-अलग घरानों के हिस्से थे। संख्या को सभी इस्राएल का प्रतिनिधित्व करने के लिये चुना जा सकता है, जिसमें मूल रूप से बारह गोत्र शामिल थीं। यह सम्बन्ध सही होगा, भले ही वापस आनेवाले मुख्य रूप से केवल यहूदा और बिन्यामीन दो गोत्र (1:5; 4:1; 10:9; नहेम्याह 11:4-8, 25, 31, 36) से थे।[5]

एक ही घराने के नाम एज्रा 2:3-15 में पाए जाते हैं (और नहेम्याह में इसी तरह की समानता)। जबकि अध्याय 8 में यह सूची अध्याय 2 की सूची के समान है, यह स्पष्ट करना पूरी तरह से भिन्न है कि दोनों सूची एक दूसरे से अलग हैं।[6] स्पष्ट है, इन परिवारों में सभी पुरुष अस्सी साल पहले जरुब्बाबेल के साथ नहीं लौटे थे। जब पाठ **अदोनीकाम के वंश में से जो पीछे गए** (8:13) लोगों के बारे में

बताता है, तो यह कहता है कि उस घराने के सभी पुरुषों ने यहूदा वापस जाने के लिये बेबीलोन को छोड़ दिया। इसका तात्पर्य यह है कि अन्य परिवारों के साथ ऐसा नहीं था, जिनके एज्रा के साथ लौटने के बाद भी बेबीलोन में रिश्तेदार रहते थे।

इस सूची की कई विशेषताएँ उल्लेखनीय हैं: (1) अन्य स्थानों की तरह, पुरुषों को उनके पूर्वजों के अनुसार सूचीबद्ध किया गया है। किसी के लिये भी उसके वंश को जानना (और सिद्ध करने में सक्षम होना) महत्वपूर्ण था। (2) केवल **पुरुषों** का उल्लेख है, परन्तु स्त्रियाँ और बच्चे उन पुरुषों के साथ होते थे। 8:21 में "अपने बाल-बच्चों" के लिये संदर्भ दिया गया है। (3) जैकब एम. मायर्स ने देखा कि "एज्रा के साथ लौटने वाले पुरुषों की संख्या, जिसमें स्वयं शास्त्री और गेर्शोम, दानिय्येल, और हत्तूस शामिल हैं, जो कुल मिलाकर पंद्रह सौ हैं," जिसमें लेवीय और मन्दिर के सेवकों शामिल नहीं है।[7] एज्रा के साथ वापस आने वाले लोगों की संख्या पाँच हजार से लेकर नौ हजार तक है।[8]

जो लौटे थे उनका विश्वास भी पहचाना जाना चाहिए। वापसी का निमंत्रण सभी लोगों के लिये दिया गया था (7:13)। केवल इन्हीं लोग वापस क्यों गए? यदि वे लोग जो जरुब्बाबेल के दिन में बेबीलोन में वहाँ रहते थे, तो बेबीलोन में रहने का उनके पास कारण था (क्योंकि वे वहाँ समृद्ध हो चुके थे), आठ दशक बाद वहाँ रहने वालों के पास रहने का और भी बड़ा कारण था। उनकी वापसी की इच्छा एज्रा की दृढ़ता और/या यहोवा, उसकी व्यवस्था और उसके भवन के प्रति उनके प्रेम की श्रद्धांजलि के रूप में माना जा सकता है।

सेवाकार्य के लिये लेवीय (8:15-20)

15इनको मैं ने उस नदी के पास जो अहवा की ओर बहती है इकट्ठा कर लिया, और वहाँ हम लोग तीन दिन डेरे डाले रहे, और मैं ने वहाँ लोगों और याजकों को देख लिया परन्तु किसी लेवीय को न पाया। 16मैं ने एलीएजेर, अरीएल, शमायाह, एलनातान, यारीब, एलनातान, नातान, जकर्याह और मशुल्लाम को जो मुख्य पुरुष थे, और योयारीब और एलनातान को जो बुद्धिमान थे 17बुलवाकर, इद्दो के पास जो कासिप्या नामक स्थान का प्रधान था, भेज दिया; और उनको समझा दिया कि कासिप्या स्थान में इद्दो और उसके भाई नतीन लोगों से क्या क्या कहना ताकि वे हमारे पास हमारे परमेश्वर के भवन के लिये सेवा टहल करनेवालों को ले आएँ। 18हमारे परमेश्वर की कृपादृष्टि जो हम पर हुई इसके अनुसार वे हमारे पास ईश्शेकेल को जो इस्राएल के परपोते और लेवी के पोते महली के वंश में से था, और शेरेब्याह को और उसके पुत्रों और भाइयों को, अर्थात् अठारह जनों को; 19और हशब्याह को, और उसके संग मरारी के वंश में से यशायाह को, और उसके पुत्रों और भाइयों को, अर्थात् बीस जनों को; 20और नतीन लोगों में से जिन्हें दाऊद और हाकिमों ने लेवियों की सेवा करने को ठहराया था, दो सौ बीस नतिनों को ले आए। इन सभों के नाम लिखे हुए थे।

जैसा कि एज्रा ने यात्रा के लिये समूह तैयार किया, उसने लेवियों की अनुपस्थिति की खोज की। अध्याय का यह भाग बताता है कि उसने उस समस्या को कैसे हल किया।

आयत 15. एज्रा ने **उस नदी के पास जो अहवा की ओर बहती है इकट्ठा** [समूह को] **कर लिया**, जहाँ वे **तीन दिन तक** डेरे डाले रहे। "अहवा" बेबीलोन के अपेक्षाकृत निकट स्थित रहा होगा, फिर भी इस स्थान की सही स्थिति अज्ञात है। "नदी" (נָהָר, *नहर*) को शायद "नाला" के रूप में सोचा जाना चाहिए। हिद्देकेल और फरात नदियों से बेबीलोन में कई नाले खोदे गए थे; उनका उपयोग सिंचाई, परिवहन और रक्षा के लिये किया जाता था। इसी कारण नहर का नाम अहवा (8:31) शहर के नाम पर रखा गया था। स्पष्ट है, यात्रा शुरू होने से पहले यह स्थान ठहरने का अन्तिम क्षेत्र था। यात्रा की शुरुवात में अहवा में समूह का तीन दिवसीय प्रवास यरूशलेम में इसके अन्त में तीन दिवसीय प्रवास द्वारा संतुलित रहा (8:32)।

एज्रा का पहला काम **लोगों** को उनके कुलों के अनुसार गिनती करना था। जब उसने ऐसा किया, तो उसे मन्दिर के सेवकों की कमी का पता चला। यद्यपि **याजक** पाए जाते थे, परन्तु कोई भी **लेवी** वहाँ इकट्ठा नहीं हुआ था। शायद लेवियों ने मन्दिर की सेवा में उनकी अधीनस्थ भूमिका के कारण लौटने से मना कर दिया था, या शायद (उनके कई देशवासियों की तरह) वे बेबीलोन में बस गए और समृद्ध हो गए थे। हर तरह से, एज्रा ने उनमें से कुछ को अपने साथ यरूशलेम ले जाने की आवश्यकता देखी। क्यों? सम्भावनाओं का सुझाव दिया गया है,[9] परन्तु कोई भी निश्चित नहीं हो सकता है। यद्यपि, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि यरूशलेम में लेवियों के होने के कारण ऐसा नहीं था; उनमें से कई जरुब्बाबेल के साथ लौटने वालों में से थे (2:40-42)।

आयत 16. आवश्यकतापूर्ण लेवियों को लेने के लिये, एज्रा ने पहले कई **मुख्य पुरुषों** की भर्ती की, जो पहले से ही उसके साथ थे, जिनके साथ दो पुरुष थे जो **बुद्धिमान** के रूप में पहचाने जाते हैं। इब्रानी शब्द (רָאשִׁים, *राशिम)* का अनुवाद "मुख्य पुरुषों" है जिसका शाब्दिक अर्थ है "परिवार के मुखिया।" शब्द (מְבִינִים, *मेबिनिम*) "सिखानेवाले" या "सीखनेवाले" (NIV) का शाब्दिक अनुवाद "जो लोग समझने वाले होते हैं" हो सकता है।

यहाँ वर्णित पुरुष 8:3-14 में सूचीबद्ध घराने के प्रमुखों के समान नहीं हैं। इस आयत में **एलनातान** नाम तीन बार दिखाई देता है, जिसके कारण कुछ विद्वानों ने इसकी ऐतिहासिक सच्चाई पर सवाल उठाया है। परन्तु, इस तरह का संदेह पूरी तरह से अनावश्यक है। जैसा कि कीथ एन. शॉविल ने बताया है, "एलनातान ('परमेश्वर ने दिया है') सम्भवतः एक जाना माना नाम था, इसलिये तीन 'एलनातान' तब सम्भव हो सकते थे जिस प्रकार तीन 'जॉन्स' अभी होते [हैं]। एज्रा और स्पष्ट रूप से यहूदियों का एक बड़ा समुदाय इन लोगों के और उनकी प्रतिष्ठा के बारे में जानते थे।"[10]

आयत 17. एज्रा ने प्रमुख पुरुषों को बताया कि क्या कहना है और फिर **उन्हें कासिप्या भेज दिया**। वह स्थान, अज्ञात था, नहीं तो लेवियों के रहने का एक स्थान

था। यह अहवा के बहुत निकट रहा होगा।

लेवियों के अगुवे का नाम **इद्दो** था। **स्थान** (מָקוֹם, *मकोम*) के लिये एक शब्द है जो सुझाव देता है कि इद्दो वहाँ स्थित एक विद्यालय का अगुवा था। एक और सम्भावना यह है कि यह एक पवित्र स्थान को संदर्भित करता है, जैसे कि यहूदियों द्वारा निर्मित एलिफेंटाइन, मिस्र में है। अभी भी एक और सम्भावना है कि यह "स्थान" आराधनालय का एक अग्रिम संरचना था।[11]

आयतें 18-20. स्पष्ट है कि एज्रा द्वारा भेजे गए पुरुष बहुत अच्छे प्रेरक थे। शायद उन्होंने अपने दर्शकों को कर्तव्य की भावना की अपील करते हुए कुछ इस तरह कहा: "परमेश्वर के भवन में सेवा करने के लिये आप परमेश्वर द्वारा बुलाए गए थे, परन्तु मन्दिर यरूशलेम में है। आप यहाँ पर क्या कर रहे हैं?"

उन्होंने जो भी कहा, उनका कार्य सफल रहा। निश्चित ही, यह यहोवा की सम्भावित सहायता के कारण था - क्योंकि हमारे **परमेश्वर का भला हाथ हम पर** (8:18) था। अड़तीस लेवियों ने एज्रा के साथ (8:18, 19), और साथ ही **मन्दिर के बड़े सेवकों** (220) ने भी यरूशलेम लौटने पर सहमति व्यक्त की। इन "मन्दिर के सेवकों" को **दाऊद और हाकिमों ने लेवियों की सेवा करने को ठहराया था** (8:20), भले ही पाँच पुस्तकों में मूल निवासस्थान से सम्बन्धित व्यवस्था द्वारा आवश्यक रहा हो।[12] लेवियों और मन्दिर के सेवकों के अतिरिक्त परिणामस्वरूप 1,758 पुरुषों की एक संगति प्राप्त हुई।[13] फिर से, केवल पुरुषों के नाम दिए गए हैं, और केवल उन्हीं की गिनती की गई थी; इसलिये नई भर्तियों (स्त्रियों और बच्चों सहित) की कुल संख्या बहुत अधिक थी।

परमेश्वर की सुरक्षा का आह्वान (8:21-23)

[21]तब मैं ने वहाँ अर्थात् अहवा नदी के तट पर उपवास का प्रचार इस आशय से किया कि हम परमेश्वर के सामने दीन हों; और उस से अपने और अपने बाल-बच्चों और अपनी समस्त सम्पत्ति के लिये सरल यात्रा माँगें। [22]क्योंकि मैं मार्ग के शत्रुओं से बचने के लिये सिपाहियों का दल और सवार राजा से माँगने से लजाता था, क्योंकि हम राजा से यह कह चुके थे, "हमारा परमेश्वर अपने सब खोजियों पर, भलाई के लिये कृपादृष्टि रखता है और जो उसे त्याग देते हैं, उसका बल और कोप उनके विरुद्ध है।" [23]इसी विषय पर हम ने उपवास करके अपने परमेश्वर से प्रार्थना की, और उसने हमारी सुनी।

समूह पूरा होने के साथ, एज्रा के निर्देश पर यहूदियों ने उपवास किया और एक सुरक्षित यात्रा के लिये प्रार्थना की।

आयत 21. अहवा नदी [या नहर] के किनारे बिताया गया समय यात्रा की तैयारी का समय था। जोसेफ ब्लेंकिंसोप ने देखा, "कठिन यात्रा के लिये व्यावहारिक और आत्मिक दोनों तैयारी थी।"[14] एज्रा ने इस क्रम में **उपवास का प्रचार** किया कि लोग **परमेश्वर** के सामने **दीन हों**। उपवास का अर्थ है बिना भोजन के शामिल

होना। यह प्रार्थना के एक साथी के रूप में सेवा थी और इसमें अकसर पाप का अंगीकार (नहेम्याह 9:1, 2; दानिय्येल 9:3) होता था।[15] जिस प्रकार लोगों ने उपवास किया, उन्होंने एक **सरल यात्रा** (דֶּרֶךְ יְשָׁרָה, *देरेक येशाराह)*, के लिये प्रार्थना की, सचमुच, एक "सीधा मार्ग।" 7:27, 28 के अनुसार स्पष्ट है, जब उसने जाना कि राजा ने उसे यरूशलेम लौटने की अनुमति दी है, तो सबसे पहले एज्रा ने जो किया वह प्रार्थना था। फिर, 8:21 के अनुसार, यात्रा में जाने से पहले अन्तिम कार्य उसने जो किया वह प्रार्थना था।

आयत 22. इस अवसर पर की जाने वाली प्रार्थनाओं के दो कारण निहित हैं। (1) यात्रा खतरनाक हो सकती थी, क्योंकि वे यात्रा करने वाले थे तो - इसलिये निःसंदेह **शत्रुओं** और चोर और डाकू का सामना कर सकते थे (देखें 8:31)। जो खजाने वे ले जा रहे थे, चोरों के लिये अवश्य था कि वे उनपर घात लगाएँ। (2) उनके पास सुरक्षा का कोई अन्य उपाय नहीं था। एज्रा ने मान लिया था कि वह यात्रा पर फारसी सेना से सुरक्षा **माँगने से लजाता था**, क्योंकि उसने घोषणा की थी कि **परमेश्वर** यात्रियों को सम्भालेंगे और उन्हें सुरक्षित रखेंगे। बाद के अवसर पर, नहेम्याह ने "इस मामले को बिलकुल अलग तरह से देखा, एक सेना की सुरक्षा को परमेश्वर के इनाम के हिस्से के रूप में स्वीकार किया(नहेम्याह 2:7-9)।"[16]

आयत 23. इस समूह की प्रार्थना और उपवास व्यर्थ नहीं था। परमेश्वर ने उनकी विनतियों को सुना और उत्तर दिया, जैसा कि यह इस अध्याय के बाकी के भाग से स्पष्ट होता है।

याजकों को मन्दिर के भण्डार के साथ कार्य सौंपना (8:24-30)

**24तब मैं ने मुख्य याजकों में से बारह पुरुषों को, अर्थात् शेरेब्याह, ब्याह और
इनके दस भाइयों को अलग करके, जो चाँदी, सोना और पात्र, 25राजा और उसके
मंत्रियों और उसके हाकिमों और जितने इस्राएली उपस्थित थे उन्हों ने हमारे
परमेश्वर के भवन के लिये भेंट दिए थे, उन्हें तौलकर उनको दिया। 26मैं ने उनके
हाथ में साढ़े छः सौ किक्कार चाँदी, सौ किक्कार चाँदी के पात्र, 27सौ किक्कार
सोना, हज़ार दर्कमोन के सोने के बीस कटोरे, और सोने सरीखे अनमोल
चमकनेवाले पीतल के दो पात्र तौलकर दे दिये। 28मैं ने उनसे कहा, "तुम तो यहोवा
के लिये पवित्र हो, और ये पात्र भी पवित्र हैं; और यह चाँदी और सोना भेंट का है,
जो तुम्हारे पितरों के परमेश्वर यहोवा के लिये प्रसन्नता से दी गई। 29इसलिये
जागते रहो, और जब तक तुम इन्हें यरूशलेम में प्रधान याजकों और लेवियों और
इस्राएल के पितरों के घरानों के प्रधानों के सामने यहोवा के भवन की कोठरियों में
तौलकर न दो, तब तक इनकी रक्षा करते रहो।" 30तब याजकों और लेवियों ने
चाँदी, सोने, और पात्रों को तौलकर ले लिया कि उन्हें यरूशलेम को हमारे
परमेश्वर के भवन में पहुँचाएँ।**

अर्तक्षत्र के पत्र में, राजा ने विशेष रूप से अंकित किया गया था कि भेंट एज्रा

को दिए जाने थे और यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर में ले जाया जाना था। आयत 24 से लेकर 30 तक यह बताते हैं कि इस कार्य को कैसे पूरा किया गया।

आयत 24. एज्रा ने **मुख्य याजकों में से बारह पुरुषों को, अर्थात् शेरेब्याह, हशब्याह और इनके दस भाइयों को अलग करके** भेंट की देखरेख के लिये चुना। एक अन्य संस्करण कुल चौबीस लोगों के बारे में बताता है: "तब मैं ने मुख्य याजकों में से बारह पुरुषों को, *अर्थात्* शेरेब्याह, हशब्याह और इनके दस भाइयों को अलग किया" (बल दिया गया है)। बाद में इस तथ्य पर सहमति दी गई कि शेरेब्याह और हशब्याह को 8:18, 19 में लेवियों (याजकों के नहीं) के रूप में सूचीबद्ध किया गया है और जिस प्रकार नहेम्याह की पुस्तक (नहेम्य. 8:7, 9; 9:4, 5; 10:9-12; 12:8, 24) में दिया गया है। यदि यह संस्करण सही कह रहा है तो बारह याजक और बारह लेवीय थे। यह आयत 30 से सहमत है, जो कहता है कि "याजकों और लेवियों ने चाँदी, सोने, को तौलकर ले लिया।"

आयतें 25-27. तब एज्रा ने राजा और उसके मंत्रियों और उसके हाकिमों और यहूदियों ने अपनी स्वयं की इच्छा से कितनी वस्तुएँ भेंट में दिए हैं (8:25)। उनकी कुल संख्या **साढ़े छ: सौ किक्कार चाँदी**, सौ किक्कार चाँदी के पात्र, **सौ किक्कार सोना, हज़ार दर्कमोन के सोने के बीस कटोरे, और सोने सरीखे अनमोल चमकनेवाले पीतल के दो पात्र** थी (8:26, 27)। एडविन एम. यामूची ने कहा, "तुलना करने पर '650 किक्कार' 49,000 पाउंड के बराबर या लगभग 25 टन चाँदी के बराबर होता है ... । '100 किक्कार' 7,500 पाउंड के बराबर होता है। यह बहुत बड़ी धनराशि है, जिनका मूल्य लाखों डॉलर है।"[17] ऐसी विशाल धनराशियाँ कुछ विद्वानों के लिये कल्पना से बाहर है; परन्तु बेबीलोन में कई इस्राएली धनी हो गए थे, और निश्चित रूप से अर्तक्षत्र एकमात्र बहुईश्वरवादी नहीं था, जो "स्वर्ग के परमेश्वर" (7:23) के "क्रोध" को रोकने के लिये उत्सुक था।

आयतें 28, 29. एज्रा ने खजाने की देखभाल करने के लिये बारह याजकों को आज्ञा दिया और उसे **यरूशलेम के** मंदिर में **प्रधान याजकों** और **लेवियों** के पास पहुँचाया। उसने उन्हें स्मरण दिलाया कि वे **यहोवा के लिये पवित्र** थे (या समर्पित थे), और इसलिये ये भेंट भी थे।[18]

आयत 30. याजकों और लेवियों ने एज्रा की चुनौती को स्वीकार किया। खजाने **तौलकर** दे दिए गए और उन्हें देखभाल के लिये सौंपा गया। स्पष्ट है, यहूदियों ने फारसियों से प्राप्त वस्तुओं का हिसाब सावधानीपूर्वक लिख लिया, शायद इसलिये कि फारसी चाहते थे कि वे ऐसा करें। अध्याय बाद में बताता है कि कैसे अन्ततः उन्होंने मन्दिर के कर्मियों को इन महान खजाने को सुरक्षित रखे जाने के लिये कहा (8:33, 34)।

यरूशलेम की ओर यात्रा (8:31-36)

31पहले महीने के बारहवें दिन को हम ने अहवा नदी से कूच करके यरूशलेम का मार्ग लिया, और हमारे परमेश्वर की कृपादृष्टि हम पर रही; और उस ने हम

को शत्रुओं और मार्ग पर घात लगानेवालों के हाथ से बचाया। [32]अन्त में हम यरूशलेम पहुँचे और वहाँ तीन दिन रहे। [33]फिर चौथे दिन वह चाँदी-सोना और पात्र हमारे परमेश्वर के भवन में ऊरीयाह के पुत्र मरेमोत याजक के हाथ में तौलकर दिए गए। उसके संग पीनहास का पुत्र एलीआज़ार था, और उनके साथ येशू का पुत्र योजाबाद लेवीय और बिन्नूई का पुत्र नोअद्याह लेवीय थे। [34]वे सब वस्तुएँ गिनी और तौली गईं, और उनका तौल उसी समय लिखा गया। [35]जो बँधुआई से आए थे, उन्होंने इस्राएल के परमेश्वर के लिये होमबलि चढ़ाए; अर्थात् समस्त इस्राएल के निमित्त बारह बछड़े, छियानबे मेढ़े और सतहत्तर मेम्ने, और पापबलि के लिये बारह बकरे; यह सब यहोवा के लिये होमबलि था। [36]तब उन्होंने राजा की आज्ञाएँ महानद के इस पार के अधिकारियों और अधिपतियों को दीं; और उन्होंने इस्राएली लोगों और परमेश्वर के भवन के काम में सहायता की।

आयतें 31, 32. एज्रा ने अपने और अन्य लोगों द्वारा की गई यात्रा के बारे में तथ्यों को संक्षेप में प्रस्तुत किया: (1) कहाँ से वे चले: **अहवा नदी से**; (2) कब वे वहाँ से चले: **पहले महीने के बारहवें दिन**; (3) जहाँ वे पहुँचे: **यरूशलेम**; (4) वे सफल क्यों हुए: क्योंकि **यहोवा परमेश्वर का हाथ** उनपर **था**। एज्रा और यहूदियों को इसमें कोई संदेह नहीं था कि वे यात्रा को सफलतापूर्वक पूरा कर सकते थे, परन्तु जब वे सुरक्षित रूप से पहुँच गए, उन्होंने अपनी सफलता का श्रेय यहोवा को दिया। उसने उन्हें **शत्रुओं और मार्ग पर घात लगानेवालों के हाथ से बचाया।**

एज्रा 7:9 कहता है कि एज्रा ने बाबुल को "पहले महीने के पहले दिन" छोड़ दिया था, जबकि यह आयत कहता है कि उसने "बारहवें दिन" छोड़ा था। कोई विरोधाभास नहीं है। वे महीने के पहले दिन बेबीलोन से अहवा नदी की यात्रा के लिये निकले थे; महीने के बारहवें दिन, वे अहवा से चले गए। ग्यारह दिनों के अन्तर में बेबीलोन से अहवा तक की यात्रा और अहवा में बिताया गया समय (जहाँ उन्होंने यात्रा की तैयारी की, लेवियों को उनके साथ जाने के लिये भर्ती किया, और उपवास और प्रार्थना की) शामिल है।

इन आयतों में, एज्रा ने यह नहीं कहा था कि वे यरूशलेम कब आए, परन्तु 7:9 में अपना आगमन "पाँचवें महीने के पहले दिन" बताता है। इसलिये यात्रा को लगभग चार महीने (120 दिन) लगे। अहवा में समय न गँवाते हुए, उन्होंने प्रति दिन 7 $^1/_2$ मील की औसत दर से लगभग 900 मील की यात्रा पूरी की।

यरूशलेम पहुँचने के बाद, अपनी अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने से पहले वे **वहाँ तीन दिन रहे** (देखें नहेम्याह 2:11)। शुरुवात करने की प्रतीक्षा उन्होंने क्यों की? एक सम्भावना यह है कि वे शुक्रवार को पहुँचे, और "सब्त के निकट होने से पवित्र योगदान देने से पहले तीन दिन की देरी की आवश्यकता थी।"[19] एक और सम्भावना यह है कि समूह लंबी यात्रा के बाद थक गया था। शायद उन्हें फिर से तैयार होने के लिये, सामान खोलने और मित्रों से अभिवादन करने में तीन दिन लग गए।

आयतें 33, 34. राजा की ओर से तय की गई और एज्रा द्वारा अपेक्षा किए

लौट आए लोगों की पहली जिम्मेदारी मन्दिर में प्रमुख **याजक**[कों] और **लेवियों** के लिये उनके साथ लाए गए खजाने को सम्भाल कर रखना था: **फिर चौथे दिन वह चाँदी-सोना और पात्र हमारे परमेश्वर के भवन में तौलकर दिए गए।** उनका तौल उसी समय **लिखा गया** था; शायद, उस लिखी गई सूची की एक प्रति राजा को वापस भेजी गई थी ताकि उसे पता चले कि उसके आदेशों को पूरा किया गया था।[20]

आयत 35. दो आयतों (8:35, 36) के लिये कहानी प्रथम पुरुष ("मैं" और "हम") से अन्य पुरुष ("वे") में अध्याय 9 में प्रथम पुरुष के लौटने से पहले बदल जाती है। निश्चित रूप से, लेखक ने इसे आवश्यक समझा कि यरूशलेम में पहुँचने पर निर्गमन के दौरान लोगों ने और क्या क्या किया, (इसके अतिरिक्त एज्रा ने अपने "संस्मरण" में जो कुछ लिखा था) यह बताते हुए कहानी को पूरा करे।[21]

मन्दिर के खजाने को सौंप देने के अपने दायित्व को पूरा करने के बाद, एज्रा और लौट आए अन्य लोगों को **परमेश्वर** को बलिदान चढ़ाना था, जिसने उन्हें यात्रा के खतरों से सुरक्षित रूप से ले आया था। इन बलिदानों में **होमबलि** और **पापबलि** दोनों शामिल थे। "चढ़ावा और समर्पण होमबलि के कुंजी थे, और प्रायश्चित पापबलि की व्याख्या देना [था]।"[22] यह दृश्य पुस्तक में पहले के उत्सवों की स्मरण दिलाता है (3:3, 4, 10, 11; 6:16, 17)।

आयत 36. एज्रा के समूह द्वारा एक और कार्य किया गया था, जब **महानद के इस पार के प्रांतों में** नियुक्त अधिकारियों को **उन्होंने राजा की आज्ञाएँ** सौंपा। उन आदेशों का परिणाम यह था कि (कम से कम इस समय तक) यहूदियों के पड़ोसियों ने **लोगों और परमेश्वर के भवन के काम में सहायता की**। अधिकारियों ने राजकीय खजाने से आवश्यक धनराशि प्रदान करके अपना समर्थन दिखाया (देखें 7:20) ताकि यहूदी मन्दिर में बलि चढ़ा सकें, जैसा कि राजा अर्तक्षत्र ने आज्ञा दी थी।

अनुप्रयोग

शत्रु के क्षेत्र में से (अध्याय 8)

एज्रा 8 बताता है कि एज्रा की यरूशलेम वापसी कैसे हुई। पाठक के लिए उसके यरूशलेम लौटने में कोई अचरज की बात नहीं है, क्योंकि अध्याय 7 उसे पहले ही इस तथ्य के विषय बता चुका है। यह ऐसा है मानो पुस्तक के लेखक ने अध्याय 7 में केवल प्रमुख तथ्य दिए और फिर इससे आगे की जानकारी को कथा के साथ एक परिशिष्ट, या फुटनोट के समान जोड़ दिया।

शिक्षक बहुधा गर्मियों की छुट्टियाँ बिता कर विद्यालय वापस लौटने वाले बच्चों से "मैंने इस ग्रीष्मकाल में क्या किया" पर निबंध लिखने के लिए कहते हैं। अध्याय 8 एज्रा का निबंध है "मैं कैसे बाबुल से यरूशलेम को आया" पर। चाहे शीर्षक बहुत उत्तेजनात्मक प्रतीत नहीं हो, परन्तु यह यात्रा अनेकों कठिनाइयों के होते हुए भी संभव हुई। हम इस लेख को एक बड़े साहसिक कार्य के लेख के समान देख सकते हैं।

हम यह कह सकते हैं कि यह अध्याय परमेश्वर के कुछ लोगों को “शत्रु के क्षेत्र में से सुरक्षित निकलते हुए” दिखाता है। मसीही होने के नाते हम एक अभिप्राय से, “शत्रु के क्षेत्र” में रहते हैं। इस कारण से हम एज्रा और उसके साथियों के अनुभवों से लाभान्वित हो सकते हैं।

उनकी यात्रा सफलतापूर्वक किस प्रकार हुई?

उन्होंने खतरे को पहचाना। शत्रु के क्षेत्र से सफलतापूर्वक निकलने के लिए, हमें सबसे पहले यह पहचानना चाहिए कि यह शत्रु का क्षेत्र है, और इसमें खतरा रहता है। अभिव्यक्ति “शत्रु के क्षेत्र में से निकलना” पर विचार करते समय, मुझे फिल्मों में सैनिकों के सावधानी पूर्वक और पीड़ा के साथ धरती पर रेंगने के दृश्य ध्यान आते हैं, कटीली तारों की बाड़ के नीचे से, सतर्कतापूर्वक अपने उद्देश्य की ओर बढ़ते हुए। ऐसे लोग ध्यान से चलते हैं क्योंकि वे उस खतरे से अवगत होते हैं जिसमें वे हैं।

यहूदियों ने भी अपनी यात्रा के खतरों को पहचाना। उन्होंने “सुरक्षित यात्रा” के लिए प्रार्थना की (8:21), जिसका तात्पर्य था कि उनकी यात्रा में खतरे थे। वे जानते थे कि उन्हें “शत्रु” के विरुद्ध परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता थी (8:22)। उनके आगमन के विषय एज्रा ने लिखा, “पहिले महीने के बारहवें दिन को हम ने अहवा नदी से कूच कर के यरूशलेम का मार्ग लिया, और हमारे परमेश्वर की कृपादृष्टि हम पर रही; और उसने हम को शत्रुओं और मार्ग पर घात लगाने वालों के हाथ से बचाया” (8:31)। वे अवगत थे कि यात्रा के समय में वे शत्रुओं द्वारा घात लगाने के वास्तविक खतरे में होंगे।

हम भी शत्रु के क्षेत्र से होकर निकल रहे हैं। हम “संसार में के नहीं हैं” (यूहन्ना 17:14-16)। हम इस संसार में “परदेशी और यात्री” हैं (1 पतरस 2:11); हमारा “स्वदेश स्वर्ग पर है” (फिलि. 3:20)। हम जो गाते हैं वह सत्य है: “हम यहाँ बस भटकते हुए तीर्थ-यात्री हैं,” और “यह संसार मेरा घर नहीं है; मैं बस इसमें से होकर निकल भर रहा हूँ।”[23] इस संसार में हमें निरन्तर शत्रु, शैतान, का सामना करना पड़ेगा, जो “गरजने वाले सिंह के समान इस खोज में रहता है, कि किस को फाड़ खाए” (1 पतरस 5:8)। हम प्रलोभनों की आशा रख सकते हैं, और हम आशा रख सकते हैं कि जब और जहाँ भी हम दुर्बल होंगे वहीं हमारे विरुद्ध प्रलोभन आएँगे।

शैतान खतरनाक है। प्रलोभन और भी अधिक खतरनाक हैं क्योंकि वे पाप की ओर ले जा सकते हैं, जिससे विनाश आता है (याकूब 1:14, 15)। परन्तु, सबसे खतरनाक यह धारणा रखना है कि हम प्रलोभनों में नहीं पड़ेंगे या यह कि हम इतने बलवंत हैं कि हम प्रलोभनों में बहक जाने के खतरे में ही नहीं हैं। पौलुस ने लिखा, “इसलिये जो समझता है, कि मैं स्थिर हूं, वह चौकस रहे; कि कहीं गिर न पड़े” (1 कुरि. 10:12)।

हमें इस खतरे के प्रति सजग रहना है: हमारा शत्रु जीवित और सक्षम है और वह उसकी सामर्थ्य में जो संभव है वह करेगा कि हम व्यक्तिगत रीति से तथा मण्डली के रूप में परमेश्वर की इच्छा को पूरा न करने पाएँ। हमें इस संभावना के प्रति सावधानीपूर्वक सचेत रहना है कि हम उसके प्रलोभनों में गिर सकते हैं।

उन्होंने योजनाबद्ध किया। यदि आप सैनिकों की टुकड़ी को शत्रु के क्षेत्र से ले जाने का दायित्व रखने वाले अफसर हैं, तो अपने सबसे आरंभिक कार्यों में से एक जो आप करेंगे वह होगा अपनी टुकड़ी को संगठित करें। एक अव्यवस्थित सेना की, शत्रु से सामना करने पर, बच कर निकल पाने की संभावना बहुत कम होती है। एज्रा यह जानता था; इसलिए उसने यह सुनिश्चित किया कि उसका दल संगठित हो।

आरंभ में, उसने यह निर्धारित किया कि उस दल मैं कौन-कौन है। उसने एक अनौपचारिक गणना की और लिखा, “मैं ने वहां लोगों और याजकों को देख लिया परन्तु किसी लेवीय को न पाया” (8:15)। अध्याय की पहली चौदह आयतें उनके नाम बताती हैं जिन्हें उसने पाया था - “उनके पूर्वजों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुष ये हैं, और जो लोग राजा अर्तक्षत्र के राज्य में बाबेल से मेरे संग यरूशलेम को गए” (8:1)। इससे अगला खण्ड यहूदियों के उन अगुवों के नामों की सूची है जो एज्रा के साथ गए और उनके साथ संबंधित लोगों की संख्या भी दी गई है जिन्होंने यात्रा की। लौट कर जाने का निमंत्रण सभी को दिया गया था (7:13)। एज्रा ने कब और कैसे जाना कि निमंत्रण स्वीकार करने वाले कौन थे? यह मानना उचित लगता है कि यह अहवा पर बिताए गए पहले तीन दिनों के समय में हुआ। उसने लोगों की गणना की और उनकी वंशावलियों की जाँच की; इससे उसे ज्ञात हुआ कि उनके मध्य कोई लेवीय नहीं था (8:15)।

उसके पश्चात उसने दल के लोगों की योग्यताओं के अभाव की पूर्ति करने से संबंधित लोगों का पता लगाया। उन्हें मंदिर में सेवकाई के लिए लेवियों की आवश्यकता थी। उन्हें लाने के लिए, उसने कुछ “मुख्य पुरुषों” और यहूदियों के “बुद्धिमानों” को समझाया कि पास के स्थान के “प्रधान” को क्या कहना है। उनके साथ मिलकर वे कई लेवियों और मंदिर के सेवकों को ले आने में सफल हुए कि वे एज्रा के दल का भाग बन जाएँ (8:16-20)।

अन्त में, संगठित होने की उसकी योजनाओं के एक भाग के रूप में, एज्रा ने “याजकों और लेवियों” को एक विशेष दायित्व दिया (8:30)। उसने उन्हें एज्रा के दल द्वारा यरूशलेम लाई जा रही बड़ी भेंटों का दायित्व दिया। यह अध्याय हमें बताता है कि उन्होंने इस जोखिम को स्वीकार किया और अन्ततः उन्हें यरूशलेम के मंदिर के अगुवों को प्रस्तुत करने में सफल रहे (8:33, 34)। इस अवसर पर उनके द्वारा कार्य के किए जाने को देखते हुए, ये लोग सत्यनिष्ठ और विश्वासयोग्य थे; वे उन्हें सौंपे गए कार्य को पूरा करने वाले थे।

क्या हम एज्रा के संगठित होने का ध्यान रखने को शत्रु के क्षेत्र में हमारी यात्रा पर लागू कर सकते हैं? इस खण्ड का सबसे उत्तम अनुप्रयोग कलीसिया के लिए किया जा सकता है, जो एक प्रतिरोधी संसार में कार्य करती है, हमारे शत्रु द्वारा निरन्तर प्रलोभनों में डाली जाती है, और बहुधा विरोध का सामना करती है। हम मण्डली के रूप में और भी अधिक उत्तम कार्य करने पाएँगे यदि हम अपने प्रयासों को संगठित करें, कम से कम निम्न बातों में:

1. हमें यह जानना चाहिए कि हम कौन हैं; हमें अपने लोगों की गणना करनी

चाहिए, या आराधना सभाओं में सम्मिलित होने वालों में आने वाले तथा न आने वालों की संख्या का पता रहना चाहिए। यह हमारे अगुवों, हमारे चरवाहों की प्रथम प्राथमिकता होनी चाहिए।

2. हमें उनके खोजी रहना चाहिए जिन्हें परमेश्वर ने कुछ विशेष गुण प्रदान किए हैं जिनके द्वारा परमेश्वर की महिमा के लिए कार्य संपन्न करने में सहायता होगी।

3. हमें फिर उन गुणवन्त व्यक्तियों को कार्य में लगाना चाहिए, उन कार्यों में उनकी भूमिका को निर्धारित करने और उन्हें सौंपे गए कार्य के लिए उन्हें उत्तरदायी बनाना चाहिए। सत्यनिष्ठ, विश्वासयोग्य, और निपुण व्यक्तियों की सहायता से हम शत्रु के क्षेत्र से होकर सुरक्षित निकलने पाएँगे।

उन्होंने परमेश्वर से प्रार्थना की और उस पर निर्भर रहे। एज्रा ने सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करने के लिए जो कुछ संभव था वह किया। जब उसने खतरे का आंकलन और अपने दल को संगठित कर लिया, तो उसने इस उद्यम को परमेश्वर के हाथों में समर्पित कर दिया:

> तब मैं ने वहां अर्थात अहवा नदी के तट पर उपवास का प्रचार इस आशय से किया, कि हम परमेश्वर के सामने दीन हों; और उस से अपने और अपने बाल-बच्चों और अपनी समस्त सम्पत्ति के लिये सरल यात्रा मांगें। क्योंकि मैं मार्ग के शत्रुओं से बचने के लिये सिपाहियों का दल और सवार राजा से मांगने से लजाता था, क्योंकि हम राजा से यह कह चुके थे “हमारा परमेश्वर अपने सब खोजियों पर, भलाई के लिये कृपादृष्टि रखता है और जो उसे त्याग देते हैं, उसका बल और कोप उनके विरुद्ध है।” इसी विषय पर हम ने उपवास कर के अपने परमेश्वर से प्रार्थना की, और उसने हमारी सुनी (8:21-23)।

एज्रा ने कहा कि उन्होंने राजा की सहायता इसलिए नहीं ली क्योंकि वे ऐसा करने से लजाते थे। उन्होंने राजा से कहा था कि परमेश्वर उन्हें आशीषित करेगा यदि वे उसकी इच्छानुसार करेंगे (8:22)। एज्रा का यह व्यवहार हमारे मानने के लिए बाध्य होने वाला उदाहरण होना संदेहास्पद है। कुछ वर्षों के पश्चात जब नहेम्याह लौटकर आया, तो राजा की सेना द्वारा उसे सुरक्षा प्रदान की गई (नहेम्याह 2:9)। नए नियम में, पौलुस ने कुछ अवसरों पर अपनी रोमी नागरिकता की सहायता से अपने प्राणों की रक्षा की। एज्रा के उदाहरण से हमें यह शिक्षा लेनी चाहिए कि परमेश्वर के लोगों को राजा की सुरक्षा सी अधिक परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता है।

इसके अतिरिक्त, हमें यह सीखना चाहिए कि हम परमेश्वर के लिए जो भी कार्य संपन्न करना चाहते हैं, हम उसे केवल तब ही संपन्न करने पाएँगे जब परमेश्वर हमारी ओर होगा। परमेश्वर के बिना, हम कुछ नहीं हैं और कुछ नहीं कर सकते हैं। क्योंकि जो परमेश्वर की ओर से होता है “वह प्रभावरहित नहीं होता है” (लूका 1:37); वह “हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है” (इफि. 3:20)।

इससे क्या आज प्रभु के लिए हमारे कार्य के विषय क्या सुझाव मिलता है? हम जब "शत्रु के क्षेत्र" से होकर निकलते हैं, तो हमें अपने शत्रुओं पर विजयी होने के लिए यथासंभव उत्तम करना चाहिए। किसी ने कहा है, "हमें ऐसे कार्य करना चाहिए मानो सब कुछ हम पर ही निर्भर है और प्रार्थना ऐसे करनी चाहिए मानो सब कुछ परमेश्वर पर निर्भर है।" यह होता भी है!

मसीहियों, प्रार्थना के द्वारा आत्मिक युद्ध के लिए तैयार हो! यदि तुम्हें ज्ञात हो कि तुम शत्रु का सामना करने वाले हो, तो क्या प्रार्थना करोगे? यदि कलीसिया ऐसी योजना को कार्यान्वित कर रही है जिससे प्रभु के लिए विजय प्राप्त होगी, तब क्या कलीसिया प्रार्थना करती है? हम एज्रा के सटीक उदाहरण का भी अनुसरण कर सकते हैं: उसने "उपवास का प्रचार किया" जिससे लोग "परमेश्वर के सामने दीन हों ... और उससे माँगें" कि उन्हें सुरक्षित यात्रा और शत्रु पर विजय मिले (8:21)। यदि हम प्रार्थना के लिए विशेष समय निकाल कर रखें, तो हम भी अवश्य ही एज्रा के समान कहने पाएंगें, "उसने हमारी सुनी" (8:23; देखें 8:31)।

उन्होंने परमेश्वर के आराधना की। अध्याय का अन्त यात्रा के सफलतापूर्वक संपन्न होने के साथ होता है:

> पहिले महीने के बारहवें दिन को हम ने अहवा नदी से कूच कर के यरूशलेम का मार्ग लिया, और हमारे परमेश्वर की कृपादृष्टि हम पर रही; और उसने हम को शत्रुओं और मार्ग पर घात लगाने वालों के हाथ से बचाया। निदान हम यरूशलेम को पहुंचे और वहां तीन दिन रहे (8:31, 32)।

परमेश्वर ने उन्हें विजय दी थी, जैसे कि साथ वर्ष पहले, परमेश्वर मंदिर के पुनर्निर्माण को संभव करवा के यहूदियों को विजय दी थी!

इसके बाद, "जो बन्धुआई से आए थे, उन्होंने इस्राएल के परमेश्वर के लिये होमबलि चढ़ाए; अर्थात समस्त इस्राएल के निमित्त: 12 बछड़े, 96 मेढ़े और 77 मेम्ने और पापबलि के लिये 12 बकरे; यह सब यहोवा के लिये होमबलि था" (8:35)। लौट कर आने वाले यहूदियों की तुरंत प्रतिक्रिया प्रभु को भेंट चढ़ाना थी। यह संभव है कि उनका यह भेंट चढ़ाने का संबंध दोष भावना से संबंधित हो, क्योंकि लेख में "पापबलि" का उल्लेख है। यह भी संभव है कि यह भेंट परमेश्वर द्वारा उन्हें प्रदान की गई सफल यात्रा के लिए गहरी कृतज्ञता की भावना के साथ अर्पित की गई।

इस प्रकार, हम यहाँ देखते हैं कि परमेश्वर के कार्य को किस प्रकार किया जाना चाहिए: यह प्रार्थना के साथ आरंभ होता है; और आराधना के साथ संपन्न होता है। हम परमेश्वर से सहायता मांगने के साथ आरंभ करते हैं; हम परमेश्वर को धन्यवाद चढ़ाने के साथ समाप्त करते हैं। कोई भी आत्मा उस मसीही से अधिक निष्क्रिय नहीं हो सकती जिसे सफलता की आशीष तो प्राप्त हुई है परन्तु जो उसके प्रति कृतज्ञ होने की उपेक्षा करता है, जो प्रत्येक अच्छा और उत्तम दान का देने वाला है (याकूब 1:17)।

उपसंहार। हम "शत्रु के क्षेत्र" में रहते हैं। हमारे पूरे करने के लिए लक्ष्य हैं,

पहुँचने के लिए उद्देश्य हैं, चढ़ने के लिए पहाड़ हैं, पूरी करने के लिए एक यात्रा है। हमारा कार्य है आत्माओं को बचाना, कलीसिया की उन्नति करना, और परमेश्वर की महिमा करना। किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए बहुत सी बातों को करना होता है, और ऐसे में बहुत कुछ गलत हो सकता है। हमारा शत्रु, शैतान, हमें पराजित करने के मार्ग निरन्तर खोजता रहता है, और हम उसी के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं!

पराजित होने से बचने, और इस प्रकार से सफल होने, जिससे प्रभु का कार्य आगे बढ़े और परमेश्वर की महिमा हो, के लिए हम क्या कर सकते हैं? सर्वप्रथम, हमें उस खतरे को पहचानना है जिसमें हम शत्रु के क्षेत्र में होकर निकलने के कारण हैं। दूसरे, हमें योजना बनाने और तैयारी करने और व्यवस्थित होना चाहिए जिससे हमारा शत्रु हमें उसे पूरा करने से न रोक सके जो हमें परमेश्वर के लिए करना है। तीसरा, जब हम सफल होने के लिए यथासंभव करते हैं, तो हम परमेश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं तथा उस पर निर्भर रह सकते हैं कि वह हमें विजय दिलवाए। केवल वही है जो हमें हमारे सामने आने वाले किसी भी खतरे में से होकर सफलतापूर्वक ले जा सकता है। अंत में, जब हम उससे विजय को प्राप्त कर लें, तो हमें उसे महिमा देना स्मरण रखना चाहिए!

सकुशल यात्रा (8:21)

एज्रा ने “सरल यात्रा” के लिए प्रार्थना की, अपने लिए भी और जो उसके साथ थे उनके लिए भी, जिनमें, उसने कहा, “अपने बाल बच्चों” के लिए भी (8:21)। हम जब भी यात्रा करें, हमें उसके उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए।

जब मैं कॉलेज में ही था, मैंने एक ग्रीष्म ऋतु में कारमेन, मैनीटोबा, कैनाडा के एक चर्च में प्रचार किया। जैसा मुझे स्मरण आता है, वहाँ के भाइयों ने प्रभु से उन सदस्यों के लिए “सकुशल यात्रा” की याचना की जो उस समय यात्रा में थे। वह पहली बार था जब मैंने उस अभिव्यक्ति को सुना था, और तब से यह मेरे साथ लगा हुआ है।

हम जब भी यात्रा करते हैं, हमें “सकुशल यात्रा” की आवश्यकता होती है। कितनी ही बातें है जो गलत हो सकती हैं! हमें अपने गंतव्य पर सुरक्षित पहुँचने के लिए परमेश्वर की आशीषों और सुरक्षा पर निर्भर रहना चाहिए।

जब हम सुरक्षित पहुँचते हैं, तो हमें स्वीकार करना चाहिए कि हमारी सुरक्षा केवल इस कारण है क्योंकि प्रभु ने हमारी देखभाल की और हमें सुरक्षा दी। हमें उसे “सकुशल यात्रा” प्रदान करने के लिए धन्यवाद करना चाहिए।

इसी विचार को और व्यापक रीति से लागू किया जा सकता है। जीवन एक यात्रा है, जन्म से लेकर कब्र तक - या, और वास्तविक रीति से जन्म से कब्र और फिर अनन्तकाल के लिए। इस क्षेत्र से होकर सफलतापूर्वक निकलने के लिए और उस स्थान पर पहुँचने के लिए जहाँ हम अनन्तकाल बिताना चाहते हैं “सकुशल यात्रा” की आवश्यकता होती है। हमें प्रतिदिन प्रार्थना करने की आवश्यकता है कि परमेश्वर हमें इस जीवन की कठिनाइयों और खतरों में से निकालकर लाएगा। जब

हम अपने स्वर्गीय निवासस्थान में सुरक्षित पहुंचें, तो हमारे जीवन भर हम पर अपनी दया बनाए रखने के लिए हम उसका धन्यवाद और आराधना कर सकें।

समाप्ति नोट

[1]निश्चय ही, मूल प्रतिलिपि में कोई अध्याय विभाजन नहीं था, इसलिये पहले पाठकों ने विचार में कोई विराम नहीं माना होगा। [2]डेरेक किडनर, *एज्रा एण्ड नहेम्याह*, द टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेंट कॉमेंट्स (डाउनर्स ग्रोव, इलोनोय: इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1979), 64. [3]एलीआज़ार और ईतामार क्रमशः हारून के तीसरे और चौथे पुत्र थे। उनके बड़े भाई नादाब और अबीहू थे (निर्गमन 6:23; देखें लैव्य. 10:1, 2, 12)। [4]रूबेन रतज़लफ़ और पॉल टी. बटलर, *एज्रा, नहेम्याह एण्ड एस्तेर*, बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज (जोप्लिन, मिसौरी: कॉलेज प्रेस, 1979), 93-94. [5]जैकब एम. मायर्स, *एज्रा, नहेम्याह*, एंकर बाइबल, वॉल्. 14 (गार्डन सिटी, न्यू यॉर्क: डबलडे & कं., 1965), 70. [6]एज्रा 2; 8; 10 में सूचियों की तुलना करने वाली एक तालिका और नहेम्याह 7; 10 में समान सूचियाँ, देखें उपरोक्त, 69. [7]उपरोक्त, 70. [8]एच. जी. एम. विलियमसन, *एज्रा, नहेम्याह*, वर्ड बाइबल कॉमेन्ट्री, वॉल्. 16 (वाको, टेक्सस: वर्ड बुक्स, 1985), 110; जी. रॉलिनसन, "एज्रा," इन *द पुल्पिट कॉमेन्ट्री*, वॉल्. 7, *एज्रा, नहेम्याह, एस्तेर एण्ड अय्यूब* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, तिथि अज्ञात), 122. [9]एक सुझाव यह है कि एज्रा ने अपनी यात्रा को दूसरे निर्गमन के रूप में देखा; यदि उसका समूह प्रतीकात्मक रूप से उस समूह के अनुरूप था, जिसने मिस्र को छोड़ा, तो इसमें कई लेवियों को शामिल करना था (देखें गिनती 10:11-28)। (एच. जी. एम. विलियमसन, "एज्रा और नहेम्याह," इन *न्यू बाइबल कॉमेन्ट्री: 21स्ट सेंचुरी एडिशन*, एड. डी. कार्सन [डाउनर्स ग्रोव, इलोनोय: इंटरवर्सीटी प्रेस, 1994], 431.) [10]कीथ एन. शॉविल, *एज्रा-नहेम्याह*, द कॉलेज प्रेस एनआईवी कॉमेन्ट्री (जोप्लिन, मिसौरी: कॉलेज प्रेस पब्लिशिंग कं.), 2001.

[11]उपरोक्त, 110. [12]विलियमसन, *एज्रा, नहेम्याह*, 117. [13]38 लेवियों को जोड़कर कुल 1,758 को, 220 मन्दिर के सेवकों और 1,500 पुरुषों (देखें 8:3-14 पर टिप्पणियाँ) को रखा गया है। [14]जोसेफ ब्लेंकिंसोप, *एज्रा-नहेम्याह*, दि ओल्ड टेस्टामेंट लाइब्रेरी (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रेस, 1988), 168. [15]उपरोक्त। [16]किडनर, 66. किडनर ने कहा, दोनों "[एज्रा और नहेम्याह का चाल चलन] विश्वास के प्रति रवैया, और अपने अपने अलग तरीके से (जैसे कि रोमियों 14:6 में विकल्प) परमेश्वर को भावता आदर देते थे" (उपरोक्त)। रुबेन रतज़लफ़ ने सोचा कि क्या एज्रा ने अशोभनीय बात की है और फिर अपनी सोच से शर्मिंदा हुआ। फिर भी, उन्होंने बाद में निष्कर्ष निकाला कि एज्रा ने स्पष्ट रूप से मानव सहायता की तुलना में परमेश्वर की सुरक्षा पर अधिक विश्वास रखा। (रतज़लफ़ और बटलर, 97.) शॉविल ने कहा कि "एज्रा का निर्णय और उसकी व्याख्या परमेश्वर पर उसके गहरे विश्वास और निर्भरता पर एक और अंतर्दृष्टि प्रदान करती है" (स्कोविल, 112)। [17]एडविन एम. यामूची, "एज्रा-नहेम्याह," इन *दि एक्सपोजिटर बाइबल कॉमेन्ट्री*, वॉल्. 4, *1 किंग्स-जॉब*, एड. फ्रैंक ई. गैबेलिन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ोंडर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1988), 660. [18]क्योंकि परमेश्वर पवित्र है, जो कोई या जो कुछ उसे समर्पित किया जाता है वह भी पवित्र होता है। उसके पवित्रता का चरम विशेष रूप से याजकों (निर्गमन 29:1; 30:30; 39:30; लैव. 21:6), लेवियों (गिनती 3:12, 13), और निवासस्थान और उसकी साज-सज्जा (निर्गमन 29:36; 30:22-29; 40:9) के लिये लागू होता है। इस अवसर पर यहोवा को चढ़ाए गए भेंटों को उसी तरह देखा जाता था। (विलियमसन, *एज्रा, नहेम्याह*, 119.) [19]मायर्स, 72. [20]यामुची, 661.

[21]अन्य पुरुष में दो आयत (8:35, 36) को, 7:1-10 के कथन की निरन्तरता के रूप में सोचा जा सकता है, और 9:1 को 8:34 में बताए गए एज्रा की कहानी की निरन्तरता के रूप में देखा जा सकता है। [22]किडनर, 67. [23]आई. एन. कारमन, "हियर वी आर बट स्ट्रेइंग पिलग्रिम्स," तथा एलबर्ट ई. ब्रमले, "दिस वर्ल्ड इज़ नॉट माए होम," *सौंग्स ऑफ द चर्च*, कोम्प. एण्ड एड. एलटन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मौनरो, लुसियानाः हॉवर्ड पबलिशिंग क., 1977).